पांच महाभूतों की कहानी

सन्तराम वत्स्य

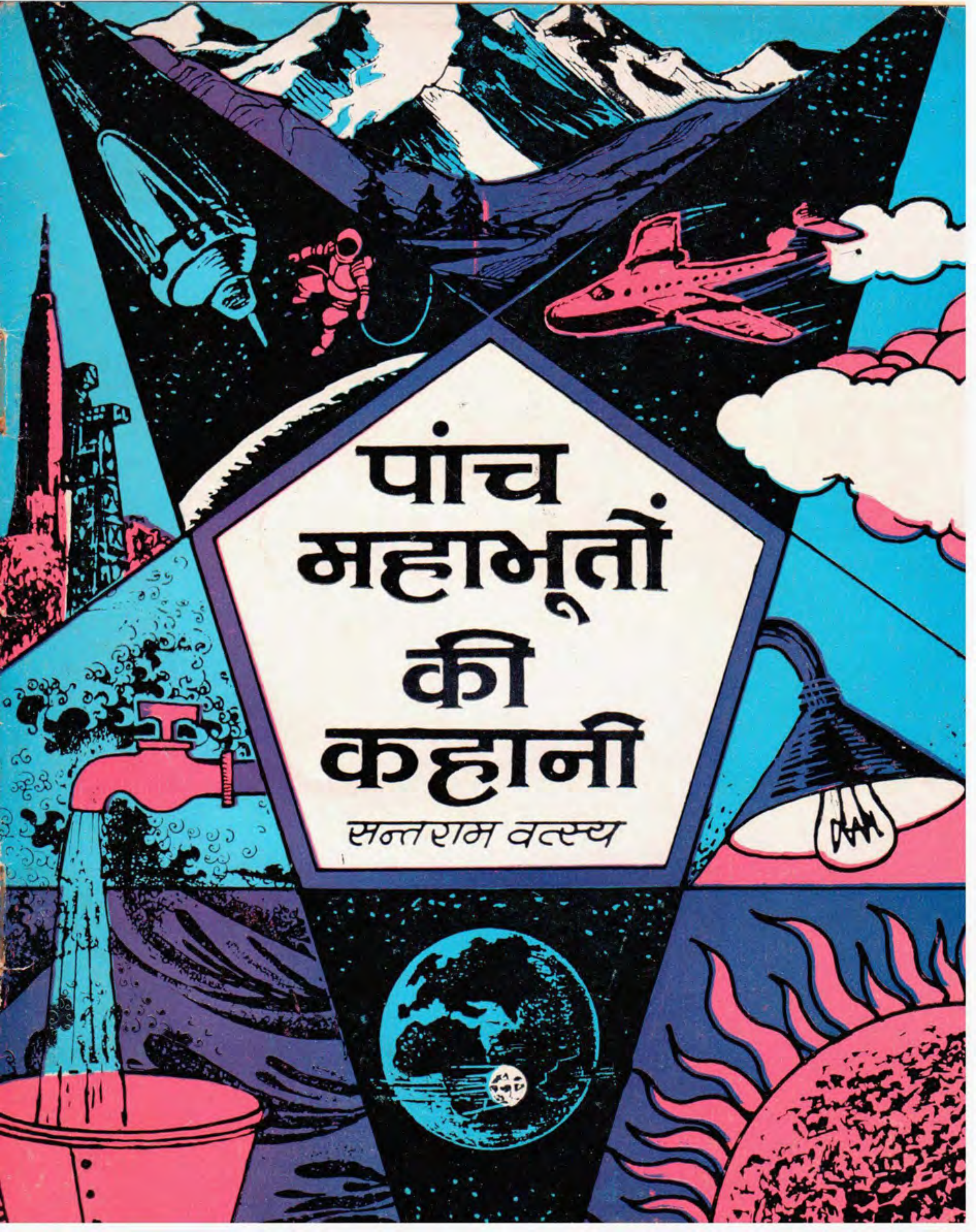

पाँच महाभूतों की कहानी

किताब घर
गांधी नगर दिल्ली-110031

दो शब्द

पृथ्वी, जल, प्रकाश, वायु और आकाश ये पांच महाभूत इस स्थूल प्रकृति के मूल उपादान हैं।

इनका परिचय पांच लेखों में पाठकों से करवाया गया है। आत्म-कथा के रूप में प्रत्येक महाभूत अपना परिचय स्वयं देता है।

इस परिचय में ज्ञान भी है और विज्ञान भी; लालित्य भी है और साहित्य भी। जहां अवसर मिला है, वहां व्यंग्य का पुट भी दिया है।

ये पांच महाभूत, जो समस्त सृष्टि का आधार हैं, हम जिनसे हैं और जो हममें हैं, जो अमूल्य हैं, जो हमारे जीवन के आधार हैं, जो हमारे अति निकट हैं और अति परिचित होने के कारण अवज्ञा के पात्र बन गए हैं, उनको कहानी का चोला पहना कर प्रस्तुत किया गया है। इन कहानियों को पढ़कर लगेगा कि विज्ञान कितना सरल है और सरस भी।

—सन्तराम वत्स्य

क्रम

धरती की कहानी	...	७
पानी की कहानी	...	१३
प्रकाश की कहानी	...	२५
हवा की कहानी	...	३३
आकाश की कहानी	...	३९

पांच महाभूतों की कहानी

सन्तराम वत्स्य

© प्रकाशक

प्रकाशक
किताबघर
मेन रोड, गांधी नगर, दिल्ली-११००३१

प्रथम संस्करण
१९८६

मूल्य
छः रुपये

मुद्रक
चोपड़ा प्रिंटर्स, मोहन पार्क,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

PAANCH MAHABHUTON KI KAHANI (Hindi)
by Sant Ram Vatsya
Price : Rs. 6.00

धरती की कहानी

मेरा जन्म कब हुआ, मुझे ठीक-ठीक पता नहीं। एक ही व्यक्ति यह जानता है और वह है सूरज। पर उससे पूछने कौन जाए!

मैं जैसी जन्म के समय थी, अब वैसी नहीं हूं। मेरे बाहरी रूप में काफी फेर-बदल हुआ है और होता रहेगा। स्वभाव भी बदला है। तब मैं बहुत गर्म थी। मुझे कोई छू भी नहीं सकता था। आज भी भीतर से तो गर्म ही हूं, हां, ऊपर-ऊपर से जरूर ठंडी हो गई हूं।

थोड़ा अपने शरीर के सम्बन्ध में भी बता दूं। जैसे मनुष्यों के शरीर में ऊपर चमड़ी और उसके नीचे हड्डियां तथा मांस होता है, वैसे ही मेरे शरीर पर भी जो सबसे ऊपर की परत है, उसे पपड़ी कहते हैं। यह पपड़ी १५ कि० मी० से लेकर ५० कि० मी० तक गहरी है। इस पपड़ी के नीचे चट्टानों का खोल है। यह कोई तीन

धरती

हजार किलोमीटर तक गहरा है। इसके भी नीचे मेरा केन्द्रीय भाग है जो साढ़े तीन हजार किलोमीटर तक गहरा है। यह केन्द्रीय भाग धातु का बना हुआ है। इस भाग में इतनी गर्मी है कि बस कुछ मत पूछो। बहुत गर्म है यह भाग। तभी तो धातुएं ठोस रूप में न होकर पिघली हुई हैं।

मेरा बाहरी आकार नारंगी जैसा है। गोल तो वह है ही पर दोनों ध्रुवों पर मैं कुछ दबी हुई-सी हूं। जैसे नारंगी होती है।

मेरे माता-पिता जो भी कहो, सूरज है। मेरे भाइयों के नाम हैं—मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, नेपच्यून, यूरेनस और प्लूटो। यों आठ भाई और नौवीं मैं धरती इनकी बहन हूं। चन्द्रमा, जिसे तुम अपना मामा कहते हो, वह वास्तव में मेरा पुत्र है। मैं तुम सबकी माता हूं। वेदों में भी लिखा है, 'माता भूमिः।'

यह जो मेरी बाहरी परत है—पपड़ी, यह भी कई तरह की है। कहीं तो सैकड़ों किलो मीटर तक रेत ही रेत है। इसे तुम लोग मरुस्थल कहते हो। कहीं पथरीली है। कहीं ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं, तो कहीं समतल उपजाऊ मैदान। पहाड़ कहीं नंगे हैं, कहीं बर्फ से ढके और कहीं जंगलों से हरे-भरे।

ओह! मैं यह बताना तो भूल ही गई कि मेरे ७० प्रतिशत भाग पर पानी ही पानी फैला हुआ है।

मेरी बाहरी परत में ही अनेक खनिज पदार्थ दबे पड़े हैं। कहीं खनिज तेल तो कहीं कोयला। कहीं लोहा तो कहीं तांबा। सोना, चांदी आदि धातुएं और महंगे रत्न भी इसी परत में हैं।

मैं लट्टू की तरह घूमती रहती हूं। मेरे इस तरह एक चक्कर लगाने में मुझे पूरे चौबीस घंटे लग जाते हैं। मेरा जो भाग सूर्य के सामने होता है उसमें दिन और दूसरे भाग में रात होती है। इसी घूमने के कारण दिन-रात बनते हैं। पर मेरी एक दूसरी गति भी है। जैसे लट्टू अपनी कीली पर घूमता हुआ इधर-उधर भी दौड़ता है, वैसे ही मैं अपनी कीली पर घूमती हुई, अपने पिता

सूरज की प्रदक्षिणा भी करती रहती हूं। पूरा एक वर्ष लगता है मुझे पिताजी की एक प्रदक्षिणा करने में। मैं ही क्यों, मेरे आठों भाई भी सदा पिताजी की प्रदक्षिणा करते रहते हैं। सबकी चाल एक जैसी तो हो नहीं सकती। और प्रदक्षिणा का घेरा भी किसी का छोटा है तो किसी का बड़ा। इसलिए प्रदक्षिणा पूरी करने का सबका समय भी भिन्न-भिन्न है।

उपग्रह द्वारा लिया धरती का फोटो

मेरी इस प्रदक्षिणा वाली गति के ही कारण ऋतु में परिवर्तन होता है अर्थात् गर्मी, बरसात और सर्दी का मौसम आता है। इस बात को ठीक तरह समझने के लिए एक-दो उदाहरण देखिए—आप यदि प्रातः काल धूप में बैठते हैं तो धूप कम गर्म मालूम देती है। परन्तु दोपहर की धूप में ज्यादा गर्मी लगती है। सांझ को जब दिन ढलने लगता है तो फिर धूप कम गर्म लगती है। इसका कारण स्पष्ट है। प्रातः और सायं सूर्य की किरणें मुझ पर तिरछी पड़ती हैं और दोपहर को सीधी। इसी तरह मेरे शरीर के जिस भाग पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं और देर तक पड़ती हैं, वहां गर्मी होती है। जहां किरणें तिरछी पड़ती हैं और थोड़ी देर पड़ती है वहां सर्दी होती है। और दोनों ध्रुवों पर जहां सूर्य की किरणें नहीं पड़तीं, वहां बहुत ठंड होती है, और सदा बर्फ जमी रहती है। इसी तरह विषुवत रेखा पर, जो पृथ्वी का सबसे अधिक उभरा हुआ भाग है, गर्मी अधिक होती है। ध्रुवों पर पृथ्वी

के अन्य भागों की तरह दिन-रात नहीं होते ।

मुझमें अनेक विचित्रताएं हैं। सबको बताने लगूं तो पूरा पोथा बन जाए ।

भूकम्प, ज्वालामुखी और ज्वार-भाटा ये तीन मेरी प्रमुख विचित्रताएं हैं।

यों मामूली भूकम्प तो जब-तब कहीं-न-कहीं आते ही रहते हैं। पर जब कभी बड़े भूकम्प आते हैं तो बड़ी उथल-पुथल होती है। मेरी ऊपर की पपड़ी तरह-तरह की चट्टानों की ऊंची-नीची तह से बनी हुई है। मेरे भीतर की हलचलों के कारण जब यह पपड़ी मुड़-तुड़ जाती है तभी उसके अपनी जगह से खिसकने या धंसने के कारण मेरा कोई भाग डांवाडोल हो जाता है। बस यही भूडोल, भूचाल या भूकम्प कहलाता है।

इस तरह मेरे केन्द्र भाग के अत्यधिक तापमान के कारण चट्टानें या खनिज पदार्थ पिघलकर गारे जैसे दलदले बन जाते हैं। इसी गर्मी से गैसें बनती हैं।

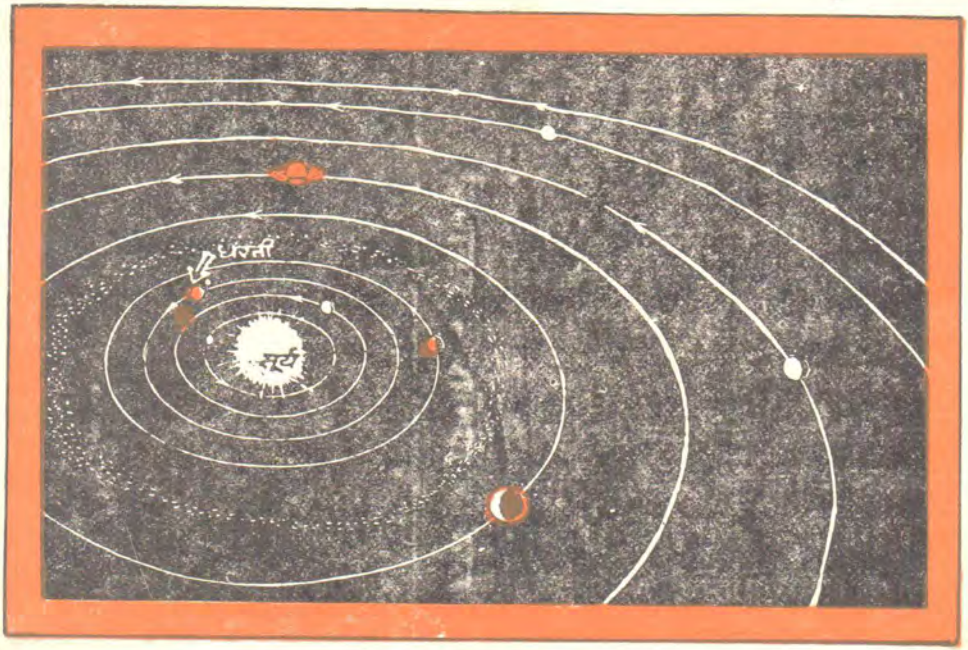

सौर मण्डल में धरती

तुम जानते ही हो कि गैसें सदा ऊपर उठने का प्रयत्न करती हैं। जहां कहीं पपड़ी की तह पतली होती है, वहां से ये गैसें उसे फोड़कर सुराख बना देती हैं और बड़ी तेजी के साथ बाहर निकलने लगती हैं। इसी सुराख से पिघली हुई चट्टानें और खनिज भी बाहर निकलने लगते हैं।

जिन लोगों ने समुद्र को अच्छी तरह देखा है वे जानते हैं कि समुद्र की लहरें एक निश्चित समय पर तट की ओर बढ़ने लगती हैं और फिर निश्चित समय पर पीछे हट जाती हैं। लहरों के बढ़ने को ज्वार और पीछे हटने को भाटा कहते हैं। ज्वार-भाटे की क्रिया सूर्य और चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण के कारण होती है। प्रतिपदा तिथि को सूर्य और चन्द्रमा एक सीधी रेखा में होते हैं। इसलिए इन दोनों के गुरुत्वाकर्षण के कारण इन दिनों बहुत ऊंचे ज्वार पैदा होते हैं।

मेरी एक और भी विशेषता है—वह है गुरुत्वाकर्षण शक्ति। मेरी इसी शक्ति के कारण आकाश की ओर फेंकी हुई चीज फिर मेरे धरातल पर वापस आ गिरती है।

मेरा एक नाम 'रत्नगर्भा' भी है। मेरे पेट में हीरा, नीलम, पन्ना, लाल

धरती

सोना, चांदी, लोहा, तांबा, कोयला, तेल आदि अनेक बहुमूल्य पदार्थ छिपे हुए हैं। तुम लोग इन्हें खोदकर निकालते हो, इसलिए तुम इन्हें खनिज कहते हो।

मैंने पहले कहा था कि मैं तुम्हारी माता हूं। मेरी पपड़ी पर पैदा होने वाले

पेड़-पौधों से ही मनुष्यों और पशुओं को भोजन मिलता है ।

हरे-भरे पेड़, रंग-बिरंगे फूल, मीठे फल और तरह-तरह के अन्न, दालें और तिलहन मैं तुम्हें देती हूं । खनिज तेल और कोयला, नमक और लोहा, रत्न और मणि और धातुएं मैं तुम्हें देती हूं । मैं अपनी ममतारूपी आकर्षण शक्ति से तुम्हें अपने से अलग नहीं होने देती हूं । और तुम्हारे सारे उत्पातों को उसी तरह सह लेती हूं जैसे तुम्हारी मां सहती है । मैं तुम्हारी जन्मभूमि हूं । मैं तुम्हारी मातृभूमि हूं, मैं तुम्हारी अन्नपूर्णा हूं । ऐ पृथ्वीपुत्रो, मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूं कि तुम ऐसे धीर-वीर बनो कि तुम्हारी जननी और जन्मभूमि का गौरव बढ़े ।

पानी की कहानी

मैं सौगन्ध खाकर कहता हूं कि जो कुछ कहूंगा, सच कहूंगा। सच के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहूंगा।

मेरा बास तीनों लोकों में है। मुझे आप आकाश में देख सकते हैं। धरती का तो तीन चौथाई भाग मैंने ही घेर रखा है। और धरती के नीचे तो प्राय: मैं सब जगह उपस्थित रहता हूं। कहीं उथला तो कहीं गहरा।

मेरा जन्म कब हुआ, यह भला दूसरा कौन बता सकता है! कोई समय था जब इस धरती पर मैं ही मैं था। न मनुष्य थे, न पशु-पक्षी और न कीड़े-मकोड़े। तब तक जीव तो जन्मा ही नहीं था। न मछली थी, न मेंढ़की और न मगरमच्छ। न वृक्ष थे न पौधे। ज्यादा बातें बनाने से क्या लाभ! यह धरती मुझमें डूबी हुई थी।

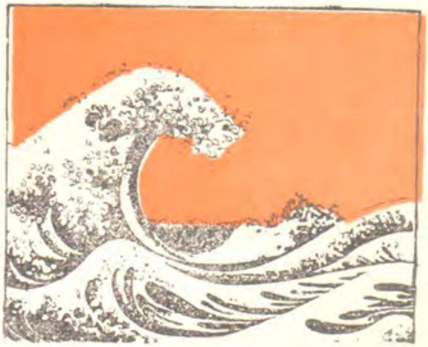

सागर की लहरें

हां, धरती पर मेरे सिवा दूसरा कोई नहीं था पर आकाश में सूरज तब भी चमकता था, चांद तब भी अपनी चांदनी छिटकाता था और आकाश में तारे भी झिलमिलाते थे। बादल गरजते थे।

बिजलियां कड़कती थीं और आंधियां चलती थीं। मूसलाधार वर्षा बरसती थी।

मैं कहीं हवा में उड़ता तो कही जमकर बैठ जाता। पर अधिकतर रमते जोगी की तरह चलता-फिरता रहता। जब कभी मैं अपने घुमक्कड़ स्वभाव को छोड़ कर एक जगह ठहर जाता हूं तो मेरी स्वच्छता और निर्मलता जाती रहती है। तभी तो कहते हैं साधु रमता भला और......।

मेरे अनेक रूप हैं। विज्ञान की शब्दावली में कहें तो पदार्थ जितने रूपों में उपलब्ध होता है, मेरे भी उतने रूप हैं। यह मेरी अपनी विशेषता है। ऐसा गुणी दुनिया-जहान में दूसरा संभवत: कोई नहीं है। मैं पानी-सा पतला, पत्थर-सा कड़ा और गैस जैसा हल्का सभी रूपों में रहता हूं। आप चाहें तो मुझे बहुरूपिया भी कह सकते हैं।

मेरी कहानी विचित्रताओं से भरी हुई है। एकदम अनोखी। अब इसी बात को देख लीजिए कि सबकी तो एक माता होती है और मेरी हैं दो। एक माता का नाम है आक्सीजन और दूसरी का हाईड्रोजन।

मैं ज्यादा सर्दी में जम तो जाता हूं पर सिकुड़ता नहीं हूं। मैं द्रवरूप में जितना स्थान घेरता हूं, ठोस रूप में उससे कुछ अधिक। और जब गर्म होता हूं तो भाप बनकर उड़ने लगता हूं। हवा के घोड़े पर सवार होकर जब मैं नगरों-ग्रामों के ऊपर से निकलता हूं तो लोग गर्दन उठा-उठाकर देखने लगते हैं। किसान तो प्राय: मेरी प्रतीक्षा करते रहते हैं और मेरे शुभागमन के लिए इन्द्र देवता से मनौतियां मानते हैं। पर जब कभी मैं प्रतिदिन उनके खेतों को नहलाने लगता हूं तो बेचारे दुखी हो जाते हैं और चाहते हैं कि मैं वापस चला जाऊं। किसानों से जब अपनी प्रतीक्षा करवाता हूं तो भी वे दु:खी होते हैं और जब उनके खेतों में डेरा डाले पड़ा रहता हूं तब भी दुखी होते हैं। तभी तो किसी ने कहा है :

अति का भला न बोलना, अति की भलो न चुप्प
अति का भला न बरसना, अति की भलि न धुप्प ।

अति बुरी है ।

मैं रंगहीन, गंधहीन और स्वादहीन हूं पर इससे कहीं यह समझने की भूल मत कर बैठना कि मैं कोई व्यर्थ की वस्तु हूं ।

पानी रे पानी तेरा रंग कैसा ?
जिसमें मिलाओ बस उस जैसा !

मेरे नाम अनेक हैं । हर भाषा और बोली में अलग नाम तो हैं ही, एक-एक भाषा में भी मेरे कई-कई नाम हैं । मेरा संस्कृत में एक नाम है 'जीवन' । यह कोई ऐसा-वैसा नाम नहीं है । सोच-समझकर रखा गया नाम है । और सच तो यह है कि मेरा सारा रहस्य इस नाम में छिपा हुआ है । मैं मनुष्यों, पशु-पक्षियों और कीड़ों-मकोड़ों सभी का जीवन हूं । यों समझिए कि प्राणी मात्र का जीवन हूं । इतना ही नहीं, मैं पौधों का भी जीवन हूं ।

एक और रहस्य की बात बताऊं । जीव जगत् का प्रारम्भ सबसे पहले मुझमें ही हुआ ।

हिन्दुओं के चौबीस अवतारों में सबसे पहला मत्स्यावतार मुझमें ही हुआ था । हिन्दुओं के देवता भगवान् विष्णु भी मुझमें रहते हैं और शेषनाग की शय्या पर सोए रहते हैं । वहीं लक्ष्मी जी उनकी चरणसेवा में लगी रहती हैं । और ब्रह्मा जी विष्णु जी के जिस नाभि कमल से उत्पन्न हुए थे, वह कौन-सा बिना मेरे उपजा होगा ! और शंकर जी की सुसराल भी तो मेरा घनीभूत रूप ही है ।

मैं ही सबको धो-पोंछकर पवित्र और निर्मल करता हूं । तन की तो बात छोड़िये, मैं बहुतों के मन को भी पवित्र करता हूं । गंगोत्तरी, युमनोत्तरी, कैलास-मानसरोवर, अमरनाथ, हरिद्वार, प्रयाग और वाराणसी, कन्याकुमारी और रामेश्वरम्, द्वारका और जगन्नाथपुरी में मैं तीर्थ रूप में पूजा जाता हूं । ये तो

मैंने मुख्य-मुख्य पांच-सात नाम गिनाए। जहां-जहां मैं तीर्थ बनकर बैठा हूं, उन सब जगहों को गिनाने लगूं तो पूरा पोथा बन जाएगा। ये तो हुए तुम्हारे पुराने तीर्थ पर पं० नेहरू ने जिन स्थानों को नया तीर्थ बताया है, वहां भी मैं ही विराजमान हूं। वहां भी मेरी ही महिमा है। भाखड़ा-नंगल हो या हीराकुड, दामोदर घाटी हो या तुंगभद्रा, नागार्जुन सागर हो या रामगंगा, नर्मदा हो या गण्डक, भद्रावती हो या व्यास सभी प्रायोजनाओं का आधार मैं ही तो हूं।

मुझे भय है कि मैं जो बार-बार अपने बारे में, अपने महत्त्व के बारे में आपको बता रहा हूं, इसे आप अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना तो नहीं समझ रहे हैं! यों भी बड़े-बूढ़ों का कहना है कि अपने मुंह अपनी प्रशंसा करना मूर्खों का लक्षण है। पर मैं आपको स्पष्ट बता दूं कि मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूं जो अपने मुंह अपनी बड़ाई करूं। मैं बड़ाई कर भी नहीं रहा हूं। यथार्थ बात कह रहा हूं। जो वास्तविकता है, उसे बता रहा हूं। मैं सच्चे अर्थों में यथार्थवादी हूं।

मुझे सबसे अधिक सम्मान किसी देश में मिला है तो वह भारत है। हिन्दू जाति ने मेरा सबसे अधिक आदर किया है। स्नानानन्द से संसार को परिचित कराने वाले ये हिन्दू ही हैं। इनके राजा का राज्याभिषेक मेरे बिना नहीं होता था।

इनके शुभ कार्यों में मुझसे पूर्ण कुंभ की पूजा अवश्य होती है।

मैं चींटी से लेकर हाथी तक की प्यास बुझाता हूं। जब धरती प्यासी होती है तो मेरी पुकार होती है :

मेघा दानी, दे······पा······।

मैं सब की प्यास तो बुझाता ही हूं, आग को भी बुझाता हूं।

मैं आग को बुझाता हूं और बिजली को पैदा करता हूं। है न विचित्र बात! पर मेरा तो सारा जीवन ही विचित्रताओं से भरा हुआ है। एक-दो हों तो गिनाऊं भी।

सबसे पहली मशीन जो मनुष्य ने बनाई थी, उसे चलाने वाला मैं ही

था। यातायात के साधनों में भी मनुष्य ने सबसे पहले मेरे प्रवाह का उपयोग किया। पशु-पालक बनने से भी पहले, घोड़े को पालतू बनाना तो बहुत बाद

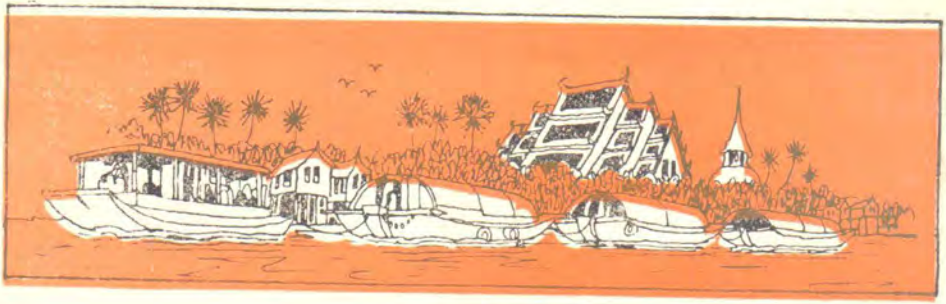

नदी द्वारा यातायात

की बात है, मुझ में तैरते लट्ठों को देखकर आदि मानव ने लट्ठों के सहारे मुझमें यातायात प्रारम्भ कर दिया था।

मैं बहुत शान्त प्रकृति हूं। मैं धीर और गंभीर हूं। मैं अपनी चौड़ी-चकली छाती पर बड़े-बड़े जहाजों को इस तरह थामे रहता हूं जैसे रुई का रेशा हो। पर जब कभी वायु मुझे छेड़-छाड़ कर कुपित कर देता है तो फिर मैं किसी को कुछ नहीं मानता। मेरी शक्ति का कोई पारावार थोड़े ही है।

मछली का मेरे साथ बड़ा ही प्रेम है। वह मेरे बिना घड़ी-दो घड़ी भी जीवित नहीं रह सकती। मेंढ़की में वह बात नहीं है। वह कभी-कभी मुझे छोड़कर भी चली जाती है।

रहीम का नाम तो आपने सुना होगा। वही रहीम जो अकबर के दरबारी थे और हिन्दी में बड़ी बढ़िया कविता लिखा करते थे। बड़े गुणी आदमी थे। मेरी महिमा को समझते थे। तभी तो कह गए हैं :

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

आपने देखा होगा कि कई लोग जब यात्रा पर निकलते हैं तो मुझे साथ ले चलते हैं। क्या पता मेरी आवश्यकता उन्हें कब पड़ जाए!

दूसरे एक बार नीचे गिरते हैं तो दोबारा उठ नहीं पाते किन्तु मैं जिस

दबाव और ऊंचाई से नीचे गिरता हूं, उसी दबाव और ऊंचाई पर ऊपर चढ़ जाता हूं।

जब कभी मैं बड़ी मात्रा में और बड़ी ऊंचाई से एकाएक गिर पड़ता हूं तो दुग्ध धवल बन जाता हूं और ऐसा आकर्षक रूप धारण करता हूं कि लोग दूर-दूर से देखने आते हैं। यही मेरा नर्तन है। इस नर्तन में मैं स्वयं ही कल-कल निनाद भी करता हूं जिससे यह नृत्य और भी मोहक हो जाता है।

मैं जब बहुत ऊंचे पहाड़ों पर रुई के गोलों जैसे रूप में गिरता हूं तो भी इस कौतुक को देखने लोग दौड़े आते हैं। और जब मेरा बुन्दियों का नाच होता है तो दर्शक देखते ही रह जाते हैं।

समाजवाद के नारे इधर आपने बहुत सुने होंगे पर मेरे सिवा दूसरा सच्चा समाजवादी आज तक कोई न देखा होगा। मैं जहां कहीं जाता हूं, समता का प्रचार करता हूं। मैं खाली स्थानों को भरने के बाद ही आगे बढ़ता हूं।

वैसे मैं अपने शुद्ध स्वरूप में रंगहीन, स्वादहीन और गन्धहीन हूं, यह पहले बता चुका हूं। पर कुसंग के कारण कभी-कभी गन्दला, सड़ांध वाला तथा खारा भी हो जाता हूं।

दूसरों के साथ घुल-मिल जाने के अपने स्वभाव के कारण भी मुझमें बहुत-सी चीजें आ मिलती हैं। कुछ तो घुलकर ऐसी एक रूप हो जाती हैं कि देखने पर पता ही नहीं चलता। इसी तरह कितने ही सूक्ष्म कीटाणु मुझमें पलते और बढ़ते रहते हैं और मुझे अशुद्ध कर देते हैं। तब समझदार लोग मेरे पास भी नहीं फटकते। भला गंदों के पास भी कभी कोई आता है!

वैज्ञानिक लोग मशीन की आंख से देखकर मुझमें छिपी सारी बुराइयों को पहचान जाते हैं और उन्हें दूर भी कर देते हैं।

मैं जब आकाश से धरती पर उतरता हूं तो शुद्ध-पवित्र होता हूं। बाद में जैसी जगह से गुजरता हूं वैसे ही दूषित पदार्थ मुझमें मिलते जाते हैं।

जब मैं किसी के उपयोगी काम में सहायक होता हूं तो मुझे बड़ी प्रसन्नता

होती है। सच तो यह है कि मैं प्राणी मात्र का अन्नदाता हूं। मैं वनस्पतियों और अन्नों को उत्पन्न करता हूं। मैं वैसे तो रंगहीन हूं पर जब कभी किसी नदी-सरोवर आदि में पर्याप्त मात्रा में होता हूं तो नीला दिखाई देता हूं।

मेरे घनीभूत वाष्प रूप को देखकर मोर नाच उठता है।

मेरी गिनती उन पांच बड़ों में होती है, जिनसे इस समस्त सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। दुनिया का विरला ही कोई ऐसा कोना होगा जहां मैं न होऊं, आदमी के शरीर का ७० प्रतिशत तो मैं ही हूं। तभी तो कबीर ने आदमी को पानी का बुलबुला कहा है। जिसे तुम शुद्ध दूध कहते हो, उसमें भी मैं ८० प्रतिशत होता हूं।

मैं प्रजापति हूं, मैं सृष्टि का पालन करने वाला विष्णु हूं। मैं जब कुपित होता हूं तो बाढ़ के रूप में भयंकर विनाश-लीला करता हूं। इस प्रकार संहार का कार्य करने के कारण मैं रुद्र भी हूं।

मेरे देवता रूप का नाम वरुण है। वरुण देवता का वेदों में खूब बखान है।

मुझे हरे-भरे प्रदेश बहुत भाते हैं। सच तो यह है कि मैं जहां अधिक मात्रा में होता हूं, वहीं हरियाली होती है। रेतीला मरु प्रदेश मुझे जरा भी नहीं भाता। वहां मैं खूब गहरे में छिपकर बैठ जाता हूं। पर 'जिन खोजा तिन पाइयां' के अनुसार खोजने वाले मुझे वहां भी खोज निकालते हैं।

दूसरे के संकेत को समझ लेना बुद्धि का काम है और आप तो स्वयं बुद्धिमान हैं। अब तक मुझे पहचान गए होंगे? मेरा नाम-धाम जान गए होंगे।

यदि अब भी मेरे नाम की पहेली आपकी समझ में न आई हो तो लीजिए कुछ अता-पता बता देता हूं। मैं खाने की चीज नहीं, पीने की चीज हूं। मैं आकाश में, हवा में, पहाड़ों, नदियों, सरोवरों आदि में रहता हूं। बावड़ियों और कुओं में भी मेरा निवास है।

अरे, धत्तेरे की ! अब भी नहीं समझे ! मैं मुंह फाड़कर ही आपको अपना नाम बता देता पर अपना और गुरु का नाम लेने की मनाही जो है ।

अच्छा, अब एक और सरल उपाय आपको बताता हूं । इससे मेरा नाम बूझने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी ।

साहित्य, संगीत और कला से तो आप परिचित अवश्य होंगे ।

'न' मत कह दीजिएगा नहीं तो आपकी गिनती बिना सींग और पूंछ वाले पशुओं में होने लगेगी ।

पहली सरगम है न । छोड़िये भी, मैं उसे नीचे लिख देता हूं ।

सा रे गा मा पा धा नी सा

इस सरगम के दो अक्षरों से मेरा नाम बना है । अब वह दो अक्षर कौन-से हैं, उन्हें ढूढ़ने का कष्ट आप कीजिए ।

तो अब मैं अपनी कहानी समाप्त करता हूं ।

चार घड़े पानी भरे
दो कहने वाले के
दो सुनने वाले के ।

सुनने वाले ने कहा : वाह साब, वाह ! खूब है आपका नाम, और अद्भुत है आपका काम ! छोटा नाम और बड़ा काम । अरे साब ! आपके आगे तो बड़े-बड़े पानी भरते हैं । क्या कहने हैं आपके प्रभाव के ! दो घड़ी मिले न पानी तो याद आए नानी ।

श्री मान् पानी ! आपके त्याग और तप की कहानी किससे अनजानी है ।

आपने संभवत: संकोचवश अपने गुणों का पूरा-पूरा बखान नहीं किया ।

यद्यपि आप स्वभाव से शीतल हैं तथापि अपने निरन्तर प्रवाह की शक्ति से बड़े-बड़े पर्वतों को काट डालते हैं । चट्टानों को चकनाचूर करके रेत बना देते हैं । आप अपने प्रवाह से तटवर्ती गर्वोन्नत वृक्षों का गर्व चूर-चूर कर देते हैं और उन्हें जड़-मूल से उखाड़ फेंकते हैं । किन्तु नम्र और कोमल स्वभाव की दूब

जो आपके आने पर झुक जाती है, उसे कुछ नहीं कहते ।

हिमालय की ऊंची चोटियों ने आपका ही मुकुट पहन रखा है। हे देवाधि-देव ! इन्द्रधनुष को रंग-बिरंगा बनाने का काम आप ही करते हैं। आप सूर्य देवता की किरणों के आकर्षण से खिंचे, हवा के घोड़े पर सवार होकर आकाश में चढ़ जाते हैं।

आपकी महिमा का बखान कोई आसान काम नहीं है। आप ही की शक्ति से वह बिजली उत्पन्न होती है, जो जग को प्रकाश देने के अतिरिक्त मशीनों को चलाने का काम भी करती है। भाप इंजन को चलाने वाले आप ही हैं। यद्यपि समुद्र में पहुंचकर कुसंगतिवश आपका स्वाद खारा हो जाता है और आप पीने योग्य नहीं रहते फिर भी आप अनेक जलचरों का पोषण करते हैं और अपने विशाल पेट में बहुमूल्य रत्न राशि को संचित रखते हैं।

महामहिम ! आप जब कुपित और क्षुभित होते हैं तो खड़ी फसलों, घरों और वनों को बहा ले जाते हैं। आपकी संहारलीला को देखकर लोग दांतों तले उंगली दबा लेते हैं।

प्रभो ! सम्भवतः मनुष्य ने सबसे पहले आपकी ही शक्ति का उपयोग करके पनचक्की नामक मशीन चलाई थी ।

इस जगत् में आपसे सच्चा प्रेम यदि कोई करता है तो वह पानी की रानी मछली है। जब मछुआ जाल फेंकता है और समेटता है तो आप तो जाल में से होकर बह जाते हैं, पर बेचारी मछली फंस जाती है।

यद्यपि आप मूल रूप में एक हैं पर आपके रूप अनेक हैं। कहीं आप बावली में कुंडली मारे बैठे रहते हैं तो कहीं कुएं में गहरे छिपे हुए। आपको कुएं से बाहर निकालने के लिए सुपात्र और गुण का सहारा लेना पड़ता है। कहीं आप झरनों और प्रपातों के रूप में प्रकट होते हैं और अपनी उदारता से सबको कृतार्थ करते हैं। जब नदी रूप में बहते हैं तो अपने ही तटों को तोड़ते चलते

हैं। जब आप सागर में जा पहुंचते हैं तो आपका धैर्य और गाम्भीर्य देखते ही बनता है। वहां पहुंचकर आप अपनी मर्यादा का पूरी तरह पालन करते हैं।

पानी का फव्वारा

कभी-कभी कुसंगतिवश गर्म हो जाते हैं पर तब देखने वालों को और अधिक भाते हैं। लोग आपमें खूब मल-मल कर नहाते हैं और गोते लगाते हैं।

कहीं आपका गर्म स्रोत धरती को फोड़कर सीधा आकाश की ओर उछल पड़ता है तो लोग आपको 'गीजर' कहकर पुकारते हैं और एकटक आपकी शोभा को निहारते हैं।

आप अपने सतत प्रवाह से चट्टानों को धीरे-धीरे काटकर जो रूप प्रदान करते हैं, उसकी समता कौन शिल्पी कर सकता है!

आप कई अभागों को शरण देते हैं। कोई लज्जाशील व्यक्ति तो चुल्लू-भर पानी में डूब मरता है और कोई इस काम के लिए कुएं के पास जाता है।

स्वतंत्रता से पहले रेलवे स्टेशनों पर आपको हिन्दू पानी और मुस्लिम पानी कहकर पुकारा जाता था पर अब वह भेद मिट चुका है।

आपकी लीला अपरम्पार है। जब आप ओस कणों के रूप में रात को हरी-हरी घास, पत्तों और फूलों पर आ विराजते हैं तो आपकी शोभा मोतियों से रत्ती-भर भी कम नहीं होती।

कभी-कभी आप धुन्ध के रूप में फैल जाते हैं तो सभी चीजों को छिपा लेते हैं। लोगों को रास्ता तक नहीं सूझता और एक-दूसरे से टकरा जाते हैं।

आपका सबसे मूल्यवान और महत्त्वपूर्ण रूप तब प्रकट होता है जब आप किसी की आंखों से बह निकलते हैं। आपके इस रूप के जादुई प्रभाव से पत्थरों का हृदय भी पिघल जाता है।

कुछ लोग जान-बूझकर आपका अपमान करने के लिए कम दाम में मिलने वाली चीज को 'पानी के मोल' कहकर अवहेलना करते हैं। पर वे नहीं जानते कि आप कितने मूल्यवान हैं। आपके ठीक महत्त्व को वही आंक सकता है जिसने कभी मरुभूमि में यात्रा की हो।

कुछ झूठी मान-प्रतिष्ठा वाले लोग पानी भरना अपमानजनक समझते हैं। विशेष रूप से रानियां। तभी तो कहते हैं :

'मैं रानी, तू रानी, कौन भरे पानी !'

पर कौन जाने कि संभवत: पानी न भरने के कारण ही आज रानियों का कहीं नाम नहीं सुनाई देता।

कभी आकाश में घूमते-फिरते आप ठंड लग जाने से सिकुड़ जाते हैं और ओलों के रूप में धरती पर आ गिरते हैं। तब आपको देखकर कितने ही बच्चों के मुंह में पानी आ जाता है और वे उठा-उठाकर आपसे अपना मुंह भरने लगते हैं।

नगरों में लोग आपको शुद्ध रूप में प्राप्त करते हैं। आपका रसोईघर, स्नानघर और घर-भर में बेरोक-टोक प्रवेश है। आप प्राय: भूमिगत होकर यात्रा करते हैं और वह भी बन्द नलों में। टोंटी का कान मरोड़ने पर आप तत्काल प्रकट होते हैं।

आपकी उच्छृंखलता को दूर करने तथा आपको अधिकाधिक लोकोपकारी बनाने के लिए आपका दीवार बांधकर घेराव भी किया जाता है। हमारे देश में कई जगह आपका स्थायी रूप से घेराव करके रोका गया है।

नगरों में विशेष रूप से दिल्ली में आपको फव्वारों में ऊंचा उछालकर विविध नृत्य मुद्राओं में मोड़कर रंग-बिरंगे प्रकाश से रंगकर, बड़ा ही मनोरम रूप प्रदान किया गया है।

अजी ज्यादा क्या कहें, यों समझिए कि जिसका पानी उतर गया वह दो कौड़ी का भी नहीं रहा।

प्रकाश की कहानी

मैं अपने जीवन के उजले पक्षों पर प्रकाश डालूं और आप मुझसे भली भांति परिचित हों, इसके लिए थोड़ी देर ध्यान से मेरी बातें सुनें।

मैं सवेरे-सवेरे दिन निकलते ही आपके आसपास उपस्थित हो जाता हूं। मेरी यात्रा का शुभारंभ पूर्व दिशा से होता है। या आप चाहें तो यों भी कह सकते हैं कि मैं जिस दिशा से अपनी यात्रा प्रारंभ करता हूं, उसे 'पूर्व' दिशा कहते हैं। 'पूर्व' माने पहले। मैं पहले उस दिशा में प्रकट होता हूं, इसीलिए तो वह 'पूर्व' है। यह जो भारत का पूर्वांचल है, असम प्रदेश, उसका पुराना नाम है 'प्राग्ज्योतिष'। अर्थात् जहां ज्योति—प्रकाश के दर्शन पहले होते हैं। यह 'पहले' और 'पीछे' की अवधारणाएं आपकी दृष्टि में हैं, मेरी में नहीं। मेरे लिए न तो कुछ पहले है और न पीछे। इसी तरह 'रात' और 'प्रभात' भी आपकी ही धारणाएं हैं। इसे मेरी विवशता ही समझें कि मैं आपको

सूर्य—अग्नि और प्रकाश का उद्गम

परिस्थिति को दृष्टि में रखकर बात कर रहा हूं। नहीं तो आप मेरी बात समझेंगे ही नहीं।

आप लोगों को 'रात' और 'अन्धकार' जैसे शब्दों का प्रयोग करते सुनता हूं तो मुझे आश्चर्य होता है। मैंने तो इस सारे सौरमण्डल को ओर-छोर घूमकर देख लिया पर मुझे कहीं भी न तो 'रात' मिली और न 'अंधेरा'।

कोई एक कह रहा था—'ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।' छाया तो मेरी सहचरी ही है। बड़ी लजीली है। वह कभी भी मेरी ओर आंख उठाकर नहीं देखती। जब कभी मैं उसके सामने होता हूं तो वह अपना आपा खोकर, मुझमें अपने को विलीन कर देती है। वह कबीर का दोहा आपने सुना होगा :

'जब मैं था, तब हरि नहीं। अब हरि है, मैं नाहि।'

बस, मेरी और छाया की बात कुछ-कुछ ऐसी ही है। एक बार जब मैं 'दीपक' के रूप में प्रकाश फैला रहा था तो किसी ने कहा कि 'दीपक तले अंधेरा' है। पर मैंने उसकी बात अनसुनी कर दी। जो अपनी जान बचाने के लिए शरण में आ जाए या लुकता-छिपता फिरे, उसे तो बख्श देना चाहिए।

क्या बच्चे और क्या बड़े, सुना है कि सभी अंधेरे से डरते हैं। पर यह कोई अच्छी बात तो है नहीं। निडर होना अच्छा जीवन जीने की पहली शर्त है। 'अभयम्' के गुण की गीता ने भी सराहना की है।

बच्चे तो बच्चे ठहरे, उनकी बात छोड़ भी दें तो भी जब वेदवाणी के गायक ऋषि को प्रार्थना करते सुनते हैं कि—'हे प्रभो! मुझे अंधेरे से प्रकाश की ओर ले चलो'[1]— तो लगता है कि उन्हें भी अंधेरे से जरूर डर लगता होगा नहीं तो ऐसी करुण गुहार क्यों लगाते।

सुना है कि वेदों में उषा की अनेक स्तुतियां हैं और उसके स्वागत में ऋषिगण पलक पांवड़े बिछाकर स्वागत गान गाते दिखाई देते हैं।

१. तमसो मा ज्योतिर्गमय।

पर जो लोग चोरी-छिपे कोई काम करना चाहते हैं, उन्हें अंधेरे से नहीं, प्रकाश से डर लगता है। प्रकाश, उनकी चोरी को प्रकाशित जो कर देता है।

अंधेरे के डर को दूर करने का बहुत ही विचित्र उपाय एक आदमी ने खोज निकाला है। बात यों हुई कि उसके पास अच्छा-खासा माल था। और था भी घर में। कौन-से नम्बर का था, कहना जरा मुश्किल है। घर में क्यों रखा था, बैंक में क्यों नहीं रखा, इस बहस में मैं क्यों पड़ूं। तो हुआ यह कि माल दिन-दिहाड़े लुट गया। अंग्रेजी में जिसे 'डे लाइट रॉबरी' कहते हैं। और उस दिन से, उस आदमी के मन से रात को लुटने का डर जाता रहा। किसी ने पूछा कि—'आपका डर कैसे दूर हुआ तो उसने जवाब दिया कि—दिन के लुटे को रात का क्या डर ?' बात है भी ठीक।

यों तो पिछले कई वर्षों से, दिन-दिहाड़े भरे बाजारों और चौराहों पर बैंकों, डाकखानों, दुकानों और मकानों में लूट-पाट होने से अब रात को लुटने का डर काफी कम हो गया है। आप चाहें तो इसे प्रगति के लेखे-जोखे में लिख सकते हैं।

हमने पीछे निर्णायक ढंग से स्वीकार किया है कि जिस दिशा में सूर्य का प्रकाश पहले हो, वह 'पूर्व' दिशा। पर सूरज को प्रकाश फैलाने की प्रेरणा कौन देता है, यह अब भी विवादास्पद है।

गोस्वामी तुलसीदास जी का कहना है : 'राम प्रकाशक, जगत प्रकासू। राम जो है सो तो प्रकाशक है और जगत को वह प्रकाशित कर रहा है। किन्तु राम तो केवल एक है। और इधर प्रकाशक-संघ ने जो प्रकाशकों की सूची प्रकाशित की है, उसमें 'ऐरे-गैरे-नत्थू-खैरे' कितने ही प्रकाशकों के नाम हैं। यह बात हमारी समझ में नहीं आई।

प्रेरणा देने का दावा करने वालो में मुर्गा भी एक है। एक सवेरे की बात है, मुर्गा मुर्गी से कह रहा था—"यह सूरज बड़ा आलसी है, जब तक मैं बांग न दूं, यह जागता ही नहीं।"

मैंने सुना तो मारे हंसी के पेट फटने लगा।

तुम्हारी हालत भी उस दम्भी मुर्गे से ज्यादा बेहतर मालूम नहीं देती। जब तुम्हारी आंखों के आगे बादल आ जाता है और तुम्हें मेरे दर्शन नहीं होते तो तुम कहते हो कि सूरज को बादल ने ढक लिया है। तुम्हारा अहंकार तुम्हें इस यथार्थ को स्वीकार करने नहीं देता कि तुम्हारी आंखों के आगे बादल हैं।

बादल तो मेरी ही सन्तान है। मैं ही उसका पिता हूं। और ग्रहण भी सूरज और चन्द्रमा को नहीं, तुम्हारी आंखों को लगता है। अगर सूरज-चन्द्रमा को लगता तो···वही तो छाया की माया है।

तुम्हारी दृष्टि दूसरों में दोष निकालने में बड़ी तेज है। यही वजह है कि तुमने सूरज और चन्द्रमा में भी कलंक खोज निकाले हैं। जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि।

तुमने संसार को अपनी सीमित दृष्टि से देखा और फिर फतवे दे डाले। एक नमूना पेश है : तुम्हारा कहना है कि हजारों तारे मिलकर भी अंधेरे को नहीं भगा पाते जबकि चन्द्रमा अकेला ही इस काम को कर डालता। भले आदमी! तुम्हें मालूम भी है कि तारे के सामने बापुरा चन्द्रमा किसी गिनती में नहीं आता! पर तुम हो कि तुम्हारी नजर में उधार का व्यापार करने वाला चन्द्रमा ही सब कुछ है।

जुगनू बहुत छोटा जीव है पर है प्रकाश का वाहक। उसे प्रकाश से बेहद प्यार है। तभी तो वह उसे ढोए फिरता है। कहते हैं कि भूले-भटके राहगीरों को रास्ता दिखाने का काम भी वह करता है।

जुगनू

विकासवाद के प्रवर्तक डार्विन का कहना है कि बन्दर से ही विकसित होकर मानव बना। पर इस बात को लोगों ने पहले जिस जोश के साथ

मान लिया था, अब नहीं मानते। प्रमाण के तौर पर कह सकते हैं कि हमारे देखने में बन्दर में विकास होता दिखाई नहीं दिया। बया के घोंसले को नोचने वाले बन्दर से लेकर आजकल के बन्दरों तक एक ने भी घर बनाकर ठंड से बचने की बात नहीं सोची। तभी तो रात में भटके किसी मुसाफिर ने जब देखा कि सारे जुगनू एक जगह इकट्ठे हो रहे हैं, क्या बात है तो मालूम हुआ कि बन्दर उन्हें बटोर लाए हैं और अब उनके ऊपर घास-फूस रखकर आग जलाने के लिए फूंकें मार रहे हैं। मूर्ख कहीं के! घर नहीं बनाएंगे, और सब कुछ करेंगे।

इधर-उधर की बहुत हो ली। अब फिर सीधे अपनी बात पर आता हूं। अभी तक आदम की औलाद को मुझसे तीव्र गति वाले किसी का नाम मालूम नहीं है। मैं एक सेकिण्ड में ३०,००,००० किलोमीटर की गति से चलता हूं।

मुझे देखने के लिए आंख का ठीक होना ज़रूरी है। यह उन आंख वालों पर लागू नहीं होता जो उलूक दिन में नहीं देखते। इनकी बिरादरी के एक नयनसुख को जब किसी पड़ोसी ने बताया कि पूर्व दिशा में सूरज निकल आया है और चारों ओर प्रकाश हो रहा है तो उसने, इस बात को झूठ माना और बोला, "मुझे न तो कोई सूरज दिखाई देता है और न प्रकाश।" ऐसों को आप क्या कहेंगे!

दर्पण--मुंह देखने का शीशा मुझे (प्रकाश को) लौटा देता है। किन्तु कांच मुझे पार जाने देता है। हां, जब मैं पानी में से होकर जाता हूं तो वह मुझे थोड़ा मोड़ देता है।

यों तो मैं आपकी हर कदम पर सहायता करता हूं पर जब कभी मैं पूरी चमक-दमक के साथ होता हूं, तो तुम्हारी आंखें चौंधियाने लगती हैं और हरा चश्मा पहन लेते हो। कभी-कभी किसी के जीवन में कुछ ऐसे सुखद परिवर्तन होते हैं कि अंधेरी जिन्दगी में उजाला हो जाता है, पर वह दूसरी बात है।

प्रकाश के अभाव में बहुत-से भ्रम पैदा होते हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध भ्रम

है रस्सी को सांप समझने का, पर प्रकाश में भ्रम पैदा होने का सार्वभौम उदाहरण तो केवल 'मृगमरीचिका' का ही है।

पुराने समय में 'प्रकाश' के लिए मशाल जलाते थे। पर मशालची यह काम दूसरों के तेल से करता था। मोमबत्ती, घी, तेल और चर्बी से दीपक जलते हैं और प्रकाश देते हैं पर घी के चिराग तो खास-खास मौकों पर ही जलते हैं।

मन्दिर में, पूजा के अवसर पर भी दीप जलाए जाते हैं। दीपावली तो प्रकाश का पर्व ही है। पुतले और दिये यों तो माटी के ही होते हैं पर कभी-कभी वे गुमान करने लगते हैं। सन्तों ने कहा कि माटी के पुतले को गुमान नहीं करना चाहिए। कौन जाने कब फूट जाए। दिये वही अच्छे समझे जाते हैं जो प्रकाश देते हैं। और प्रकाश के लिए उनकी अग्निदीक्षा जरूरी होती है।

आजकल हर चीज डिब्बाबन्द मिलने लगी है। मुझे भी वैज्ञानिकों ने सूखी और गीली बैटरियों में बन्द कर बिकाऊ माल बना दिया है।

एक छोटी-सी बोध कथा सुनाता हूं। एक अंधे को किसी पड़ोसी ने रात के भोजन के लिए बुलाया। भोजन करने के बाद गांव के रास्तों से परिचित अंधा जब लौटने लगा तो उसने एक लालटेन की मांग की। घर के मालिक ने हैरानी से पूछा कि लालटेन का आप क्या करेंगे? आप देख तो सकते नहीं। तब वह अंधा बोला कि अंधेरे में दूसरी ओर से आने वाला कोई आंख वाला मुझसे न टकरा जाए, कम-से-कम वह तो देख ले कि कोई आ रहा है।

पर हुआ यह कि लालटेन बुझ गई ओर दूसरी ओर से आता आंख वाला अंधे से टकरा गया। तब, जैसाकि प्रायः होता है कि हम गलती हमेशा दूसरे की बताते हैं, उस आंख वाले ने कहा कि "क्या अंधे हो?"

अंधे ने कहा कि मैं तो अंधा हूं ही, पर क्या आप भी अंधे हैं? आपको यह लालटेन नहीं दिखाई दी? आंख वाले ने कहा कि कहां है लालटेन। तब अंधे ने हाथ की लालटेन आगे कर दी पर उसे क्या पता था कि वह बुझ चुकी है।

इसलिए कहता हूं अपनी आंखें ठीक हों तभी आप मेरा दर्शन कर सकते हैं और उनसे लाभ भी उठा सकते हैं। उधार का प्रकाश काम नहीं देता।

खेल-तमाशा बच्चों को ही नहीं, बड़ों को भी भाता है। बच्चों को फुलझड़ी से आनन्द मिलता है तो बड़ों को आतिशबाजी से। ये सब मेरे ही रूप-रंग हैं। पर मेरे साथ खेल खेलते समय यदि खेल के नियमों का पालन ठीक से नहीं करोगे तो दीवाली के दिन होली जला बैठोगे। तुम्हारी रंग-प्रियता ने मुझे भी रंगीन बना दिया है। तभी तो मेरे बाहर रंगीन कांच के खोल लगाकर तुम मुझे रंगीन रूप में देखकर आनन्दित होते हो।

मेरी वास्तविक छटा देखनी हो तो 'इन्द्रधनुष' को देखना। तुम चाहो तो अपने घर में भी छोटा-सा इन्द्रधनुष बना सकते हो।

यह जो तुम शुभ्र प्रकाश देखते हो, वह मेरा मिश्रित रूप है। मेरे सात रंगों का मिश्रण। तुमने पढ़ा नहीं तो सुना जरूर होगा कि पुराणों में लिखा है कि सूरज के रथ में सात घोड़े जुते रहते हैं। यह तो पुराणों का बात कहने का एक ढंग है। यह रूपक है। सात घोड़े मेरी सात रंगों की किरणें ही हैं।

फोटो प्रकाश और छाया के कम-अधिक घनत्व के अलावा और क्या है!

सिनेमा के पर्दे पर भी तुम जो कुछ देखते हो, प्रकाश और छाया का खेल ही तो है! टेलीविजन में भी वैसी ही बात है।

विज्ञान जगत के मनीषी आइन्स्टाइन का नाम तुमने जरूर सुना होगा। बड़ी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे, आइन्स्टाइन। उन्हीं का प्रसिद्ध सूत्र है:

$$\text{ऊ} = \text{स}\ \text{प्र}^2$$

इसमें 'ऊ' ऊर्जा, 'स' संहति और 'प्र' प्रकाश के लिए प्रयुक्त है। इसे अंग्रेजी में $E = MC^2$ लिखेंगे। प्रकाश की उत्पत्ति और रूपान्तरण को समझाने वाला यह सिद्धान्त है।

यह तो आप जानते ही हैं कि विद्युत् ऊर्जा के द्वारा प्रकाश होता है। और

यही ऊर्जा, मोटर चलाने का काम भी करती है।

मशाल, मोमबत्ती, तेल और चर्बी का दीपक, मिट्टी के तेल से जलने वाली लालटेन, बिजली के लट्टू, गैस से जलने वाले लैम्प, सूखी और गीली बैटरियों से जलने वाले बल्ब प्रकाश के साधन हैं। दियासलाई में रगड़ से जलने वाला मसाला है तो टार्च में सूखी बैटरी और बस, मोटर और ट्रक की आंखों में गीली बैटरी का प्रकाश है।

मुझे (प्रकाश की) दास बनाने और मुझसे तरह-तरह के काम करवाने में मानव को जो सफलता मिली है, वह मेरे स्वभाव को अधिकाधिक समझने के अलावा और कुछ नहीं है। मेरे स्वभाव, मर्जी के बिना मुझसे कौन कुछ करवा सकता है।

प्रकाश के उपकरण

हवा की कहानी

जो चीज आपके लिए जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण है, जो चीज इतनी अनमोल है, फिर भी बिना मोल मिलती है, जो चीज आपके चारों ओर फैली हुई है, उसकी ओर आपका ध्यान न जाए तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। हम प्रायः उन्हीं चीजों की ओर ध्यान देते हैं जो दुर्लभ होती हैं, फिर वे चाहे हमारे ज्यादा मतलब की भले ही न हों।

मेरे बिना आप एक दिन तो क्या, एक घंटा भी जीवित नहीं रह सकते। और अगर मैं कहूं कि पांच मिनट भी नहीं तो भी झूठ नहीं होगा। अब तो मैं समझती हूं, आप मेरा नाम जान गए होंगे।

धरती पर ऐसी कोई जगह नहीं जहां मैं न होऊं। इतना ही नहीं, आकाश में भी पचासों मील तक मैं फैली हुई हूं। यह अलग बात है कि कहीं-कहीं बहुत पतली हूं। विशेष रूप से अधिक ऊंचाई पर।

अच्छा, जरा यों सोचिए कि हवा का एक महासागर है और आप उसकी तली में रह रहे हैं। पर ध्यान रखें कि यह महासागर आपके खारे पानी के महासागर की अपेक्षा बहुत ज्यादा गहरा और विस्तृत है।

यह तो आप जानते ही हैं कि मुझमें भार होता है। यह बात अलग है, यह भार बहुत कम होता है। कहते हैं न—'हवा से हल्का और पानी से पतला'। फिर भी आपके शरीर के प्रत्येक वर्ग इंच पर पन्द्रह पौंड भार जितना मेरा दबाव होता है। आप कहेंगे कि, आपको तो मालूम नहीं देता। न दे। आपको

तो मैं दिखती भी नहीं हूं, तो क्या मैं हूं ही नहीं।

मेरी रचना मुख्य रूप से नाइट्रोजन और आक्सीजन गैसों से हुई है पर कुछ-कुछ अंश कई अन्य गैसों का भी है।

अच्छी संगत और खोटी संगत का प्रभाव जैसे आप लोगों पर पड़ता है, वैसे ही मुझ पर भो। जब खोटी संगत का प्रभाव मुझ पर पड़ता है तो लोग कहते हैं, वायु दूषित है।

जब खोटी संगत से बची रहती हूं और भलों का सत्संग करती हूं तो शुद्ध वायु, शीतल-सुखद वायु या सुगन्धित वायु कहलाती हूं। पर कहते हैं न 'अति सर्वत्र वर्जयेत्', जब अति शीतल या अति गर्म होती हूं तो लोग मुझे पसन्द नहीं करते और घरों की खिड़कियां तथा दरवाजे बन्द कर लेते हैं। जब बहुत ठंडी होती हूं, तो लोग कहते हैं कि 'काटने को दौड़ती है' और जब बहुत गर्म होती हूं, कहते हैं 'आग बरस रही है।'

मैं अपने पास कभी थोड़ा तो कभी बहुत पानी जरूर रखती हूं। सूर्य की गर्मी भी मौसम के अनुसार मेरे साथ रहती है। धरती की धूल के कण भी मैं अपने साथ उठाए फिरती हूं। मेरे मार्ग में सुगन्ध आए तो उसे साथ ले लेती हूं। दुर्गन्ध आए तो उसे भी। जब मेरा सुगन्धित झोंका लोगों के पास पहुंचता है तो लोग प्रसन्न होते हैं और जब दुर्गन्धयुक्त होती हूं तो नाक ढक लेते हैं। रेगिस्तान में बहती हूं, तो रेत उड़ाती हूं, औद्योगिक नगरों में से होकर निकलती हूं तो धुआं। हरे-भरे वनों या समुद्र या जलाशयों से होकर आती हूं तो शीतलता अपने साथ लाती हूं।

मेरी गति कभी तेज होती है तो कभी मन्द। सच तो यह है कि मेरी गति बढ़ाने-घटाने का काम ये सूर्य देवता करते हैं। मुझे उनकी इच्छा के अनुसार ही अपनी गति रखनी पड़ती है।

गर्मियों में कभी-कहीं कुछ देर के लिए सुस्ताने लगती हूं तो हाहाकार मच जाता है। लोग कहते हैं वायु एकदम बन्द है। झूठे कहीं के ! जब वायु बन्द

होगी तो उनकी जबान भी बन्द हो जाएगी। और तेज चलती हूं तो वैसे हाहाकार मच जाता है। कुछ पेड़ गिर पड़ते हैं, कुछ छप्पर उड़ जाते हैं। भई, यह तो सीधी-सी बात है कि जो कमजोर होगा, वह तो गिरेगा ही। कमजोर का साथी कौन बने ! मैं कमजोर दीपक को तो बुझा देती हूं किन्तु कहीं आग भड़की हो तो उसे और बढ़ा देती हूं।

मैं सदा गतिशील रहती हूं, बहती रहती हूं। तुम लोग कहते हो न 'बहता पानी निर्मला', यह बात मुझ पर भी लागू होती है। जब लोग मुझे कमरों में बन्द कर देते हैं, तो मैं भी अस्वच्छ हो जाती हूं।

कितनी विचित्र बात है कि आप लोग स्वयं ही तो मुझे दूषित करते हैं और जब मेरे दूषित होने के कारण तरह-तरह के रोग फैलते हैं तो बुराई मुझे मिलती है।

कारखानों की चिमनियों का धुआं, कारों, बसों और स्कूटरों का धुआं, अंगीठियों और चूल्हों का धुआं, मल और मलबे से उठने वाली दुर्गन्ध, सिगरेटों का विषैला धुआं—कहां तक गिनाऊं, इतना सारा धुआं और दुर्गन्ध मुझमें मिलाते हैं आप और जब बीमारियां फैलती हैं तो दोष मुझे देते हैं।

कभी चीनी मिल के पास से गुजरते हो तो नाक पर रूमाल रख लेते हो। कौन मुझे गंदा करता है ? इधर-उधर चीजें पड़ी सड़ती रहती हैं, और उनकी दुर्गन्ध मुझमें मिलती रहती है।

फिर बहुतों को तो सांस लेने तक की समझ नहीं है। इससे उन्हें और भी अधिक हानि उठानी पड़ती है।

एक बार मुझमें और सूर्य में एक व्यक्ति के कपड़े उतारने की शर्त लग गई थी। उस शर्त में मैं हार गई थी पर इससे कोई यह समझने लगे कि मैं कमजोर हूं, तो यह उसकी भूल होगी।

बड़े-बड़े वृक्षों को उखाड़कर फेंक देना, जहाजों और हवाई जहाजों को उलटना और गिराना, बड़ी चट्टानों तक को खुरच-खुरच कर मिटा देना, मेरे लिए

मामूली बात है।

बादलों को मैं ही उड़ाती हूं। रेगिस्तानों में रेत के टीलों को उठाकर दूर

बादल एवं वायु का दृश्य रूप

फेंक आती हूं। मैं जब क्रुद्ध होती हूं तो धूल के बादल से सूरज तक को ढक देती हूं।

मेरे बिना कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकता। मेरे बिना किसी का चूल्हा नहीं जल सकता। मैं ही सूर्य के सहयोग से पानी से बादल बनाती हूं।

पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण में जहां चाहूं, चली जाऊं। कोई मुझे रोक नहीं सकता। पाल वाले जहाजों को मैं ही चलाती हूं। पवन चक्की देखी है? उसका तो नाम ही मेरे नाम पर रखा गया है क्योंकि उसे मैं ही तो चलाती हूं।

क्या-क्या गिनाऊं! तुम्हारे फुटबाल से लेकर गाड़ियों के टायरों और वैज्ञानिकों द्वारा मौसम की जानकारी के लिए छोड़े गए गुब्बारों में मैं ही तो भरी होती हूं।

वायु का उपयोग

मैं निराकार और सर्वव्यापक हूं। वायुमण्डल मेरे शरीर का घेरा है। मेरा मण्डल तुम्हारी धरती से भी बड़ा है।

पैराशूट और पक्षी वायु में

तुम्हारी कागज की पतंग से लेकर हवाई जहाज तक मेरे कारण उड़ते हैं। ये जो तुम्हारी ऋतुएं हैं, ये सिवा मेरे परिवर्तनों के और क्या हैं? मैं

कितनी ठण्डी या गर्म हूं, मुझमें कितना पानी है तथा मैं किस गति से बह रही हूं—तुम्हारा मौसम इसके सिवा और क्या है !

मैं जब क्रुद्ध होती हूं तो लोग कहते हैं आंधी आ गई। झट दरवाजे-खिड़कियां बन्द कर लेते हैं। उस समय मैं काली दिखती हूं। तब बादलों में जो गड़गड़ाहट और बिजली की चमक होती है, वह मेरे ही क्रोध के कारण। मैं घरों में बन्द दरवाज़ों और खिड़कियों को थपथपाती हूं पर मारे डर के कोई उन्हें खोलता नहीं है। सब घरों में छिप जाते हैं। क्या तुम्हारे, घर में जब किसी को क्रोध आता है तो वह भी ऐसा ही नहीं करता !

आंधी

जब कुछ लोग जरा-सी सफलता मिलने पर हवा में उड़ने लगते हैं तो कुछ लोग उन्हें यह चेतावनी देने से नहीं चूकते कि म्यां, किस हवा में हो ! संभलकर चलो। अपराधियों को बाहर की हवा अच्छी नहीं लगती, इसलिए वे जेल की हवा खाने चले जाते हैं। इसके विपरीत जेल का नाम सुनते ही कुछ लोगों की हवा सरक जाती है।

कुछ लोग हवा का रुख देखकर बात करते हैं तो दूसरे लोग हवाई घोड़े दौड़ाते हैं।

कोई जमाना था कि देश में गांधी की आंधी थी, आजकल किसी और की हवा है।

समझदार लोग सदा ही हवा का रुख देखकर चलते हैं। क्या आप अपना नाम समझदारों की सूची में नहीं लिखाना चाहते !

आकाश की कहानी

मैं वह हूं जो कुछ नहीं है। या यों भी कह सकते हैं कि मैं जैसा आपको दिखाई देता हूं, वैसा नहीं हूं। मैं अदृश्य हूं, अस्पृश्य हूं। न मुझे आप सूंघ सकते हैं और न सुन सकते हैं। इस हालत में स्वाद चखने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। यद्यपि आपकी पांचों ज्ञानेन्द्रियां मेरा अता-पता बताने में असमर्थ हैं, फिर भी कोई भी जगह ऐसी नहीं है, जहां मैं न होऊं।

'ब्रह्माण्ड' शब्द सुना है न तुमने ? वह मेरे ही विस्तार का नाम है। इस ब्रह्माण्ड शब्द में जो 'अण्ड' है न, उसका अर्थ है, अण्डा। तुम प्रायः शून्य (०) को अण्डा कह देते हो। जैसे शून्य अंक मिलने पर कहते हो कि अध्यापक जी ने कापी पर अण्डा बना दिया।

अण्डे के खोल को अगर मध्य में से काट दिया जाए और ऊपर के खोखले भाग को भीतर की ओर से देखें तो वह गुंबद की तरह फैला दिखाई देगा। ऐसा ही, आधे अण्डे के भीतरी भाग जैसा तना हुआ, मैं भी आपको दिखाई देता हूं। इसलिए मुझे ब्रह्म का अण्डा (ब्रह्माण्ड) कहते हैं।

मेरा आधा ही भाग आपको दिखाई देता है। कारण स्पष्ट है, दूसरा आधा भाग तो पृथ्वी के दूसरी ओर से दिखाई देगा। मेरा किनारा जिस जगह धरती को छूता-सा दिखाई देता है, उसे क्षितिज कहते हैं।

मेरा रंग जो आपको नीला दिखाई देता है, वास्तव में नीला है नहीं। मैं कोई चीज नहीं हूं जो मेरा कोई रंग-रूप हो। मैं जब खाली घड़े के भीतर

होता हूं तो घड़े के भीतरी आकार का बन जाता हूं और जब कमरे के भीतर होता हूं तो कमरे के भीतरी आकार जैसा। वेदान्त वाले इसे घटाकाश और मठाकाश कहते हैं।

मेरी बात ठीक-ठीक समझ रहे हो न! कहीं मुझे हवा समझने की गलती मत कर बैठना। मैं हवा नहीं हूं। हवा को मैं ही जगह देता हूं। हवा को ही क्या, हर चीज को।

दिन में आप सूरज को मुझमें, इधर से उधर जाता देखते हैं, रात में चन्द्रमा और तारे आपको मुझमें दिखाई देते हैं। सलमा-सितारे जड़ी काली चुनरी-सा मैं आपको दिखाई देता हूं। तब मेरी शोभा देखते ही बनती है। अंधेरी रातों में झिलमिलाते तारे और चांदनी रातों में चन्द्रमा चांदनी छिटकाता दिखाई देता है।

रात में एक और चीज भी आपको मुझमें दिखाई देती है। यह है—आकाश गंगा। यह दूधिया अर्धचक्र के रूप में, मेरे मध्य भाग से जाती हुई दीखती है। यह आकाश गंगा न तो सब जगह एक जैसी चौड़ी है और न ही इसकी चमक सब जगह एक-सी है।

रात के काले पर्दे पर फैले हुए ये तारे ऐसे दिखाई देते हैं, जैसे सारे एक जैसी दूरी पर हों पर वास्तव में ऐसा नहीं है। चन्द्रमा की दूरी केवल २ लाख, ३९ हजार मील है। इस दूरी को प्रकाश सवा मिनट में तय कर लेता है। किन्तु कुछ तारे तो इतनी दूर हैं कि उनके प्रकाश को धरती तक पहुंचने में हजारों-लाखों वर्ष लग जाते हैं।

तुम देखते ही हो कि मैं दिन में नीला और रात में काला दिखाई देता हूं। मेरे नीले रंग का दिखने का कारण है प्रकाश की किरणों का बिखर जाना। वायुमण्डल में जलवाष्प और धूलि के कण विद्यमान रहते हैं। प्रकाश की किरणें इनसे टकराकर बिखर जाती हैं। इसीसे मैं नीला दिखाई देता हूं। वास्तव में मेरा अपना तो कोई रंग ही नहीं है।

और रात को अंधेरा होने के कारण काला दिखाई देता हूं।

मैं कितना विस्तृत हूं इसकी कल्पना करने पर भी सिर चकराने लगेगा तुम्हारा।

तुमने अभी जाना कि चन्द्रमा धरती से २ लाख ३९ हजार मील दूर है और उसके प्रकाश को धरती तक पहुंचने में सवा मिनट लगता है। सूर्य और भी ज्यादा दूर है। सूर्य के प्रकाश को धरती तक पहुंचने में आठ मिनट लगते हैं। कुछ तारे इतनी अधिक दूर हैं कि उनके प्रकाश को धरती तक पहुंचने में लाखों वर्ष लग जाते हैं। इसलिए वैज्ञानिकों ने तारों की दूरी मापने के लिए 'प्रकाश वर्ष' नामक पैमाना बनाया है। इसको ज़रा ठीक से समझ लें। प्रकाशवर्ष उस दूरी का नाम है, जिसे प्रकाश एक वर्ष में तय करता है। यह, लगभग ५८,८०,००,००,००० मील है। कुछ तारे ऐसे हैं जिनके प्रकाश को धरती तक पहुंचने में ३०० प्रकाश-वर्ष लग जाते हैं। और यह जो आकाश गंगा है, इसका व्यास एक लाख प्रकाश वर्ष है। और ऐसी न जाने कितनी आकाश-गंगाएं मेरे पेट में समाई हुई हैं, आकाश गंगा, जिसे नीहारिका या मन्दाकिनी भी कहते हैं अनगिनत तारों का समूह है। तुम्हारा यह बेचारा सूर्य, आकाश गंगा का एक क्षुद्र-सा तारा है।

क्योंकि तुम तारों से बहुत दूर हो, इसलिए तुम्हें तारे छोटे-छोटे दिखाई देते हैं। पर वे छोटे हैं नहीं। तारा कहने से तुम टिमटिमाते प्रकाश के दीपक जैसी किसी चीज को समझते हो। पर यह सच नहीं है। तुम्हारी आंख न तो उनके प्रकाश को सह सकती है और न उनके विस्तार को आंक सकती है। तुमसे सूर्य का प्रकाश भी नहीं सहा जाता और गर्मी भी नहीं झेली जाती। और तुम्हारा यह सूरज तो उनके सामने किसी गिनती में नहीं आता।

फिर भी सूरज पृथ्वी से तेरह लाख गुणा बड़ा है और सूर्य की पृथ्वी से दूरी ९,३०,००,००० मील है। फिर भी यह मेरे लिए एक धूलिकण से अधिक नहीं है।

जिसे तुम सौर मण्डल कहते हो, उसका केन्द्र यह सूरज ही है। इसके नौ ग्रह हैं, जो इसकी परिक्रमा करते रहते हैं। तारे और ग्रह के अन्तर को समझते हो न ! जो अपने प्रकाश से प्रकाशित हो, वह तारा और जो दूसरे के प्रकाश से प्रकाशित हो वह ग्रह।

यद्यपि सूर्य से ग्रह काफी छोटे हैं, पर कुछ ग्रह तुम्हारी धरती से काफी बड़े भी हैं। ग्रहों के अतिरिक्त हजारों चूर्णिकाएं और धूमकेतु भी हैं। असंख्य छोटे-छोटे टुकड़े और कण भी हैं। पदार्थों में छोटे-छोटे टुकड़े सौर मण्डल में घूमते रहते हैं और कभी-कभी पृथ्वी पर भी आ गिरते हैं। पृथ्वी के वायुमण्डल में आकर घर्षण के कारण ये पुच्छल तारे जैसे दिखाई देते हैं।

सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं। ये वृत्ताकार या अण्डाकार मार्ग में सूर्य का चक्कर लगाते रहते हैं। सभी ग्रह एक ही दिशा में सूर्य की परिक्रमा करते हैं। जिसे तुम उत्तरी ध्रुव कहते हो, अगर वहां से ग्रहों की गति का निरीक्षण-परीक्षण करें तो सभी ग्रह घड़ी की सूइयों से उल्टी दिशा में घूमते दिखाई देते हैं। ग्रह अपनी धूरी पर भी इसी दिशा में घूमते हैं। और सूर्य भी अपनी धुरी पर इसी दिशा में घूमता है। ग्रहों के उपग्रह भी, जैसे पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा है, इसी दिशा में अपने ग्रह की परिक्रमा करता है।

आकाश दूरबीन

ग्रहों के परिक्रमा भागों को रेखांकित करें तो पूरा सूर्य मण्डल एक तश्तरी जैसा दिखाई देगा।

आज ग्रहों के बारे में आप जितनी बातें जानते हैं, इसका बहुत कुछ श्रेय गैलीलियो को है। सबसे पहले उसी ने अपने

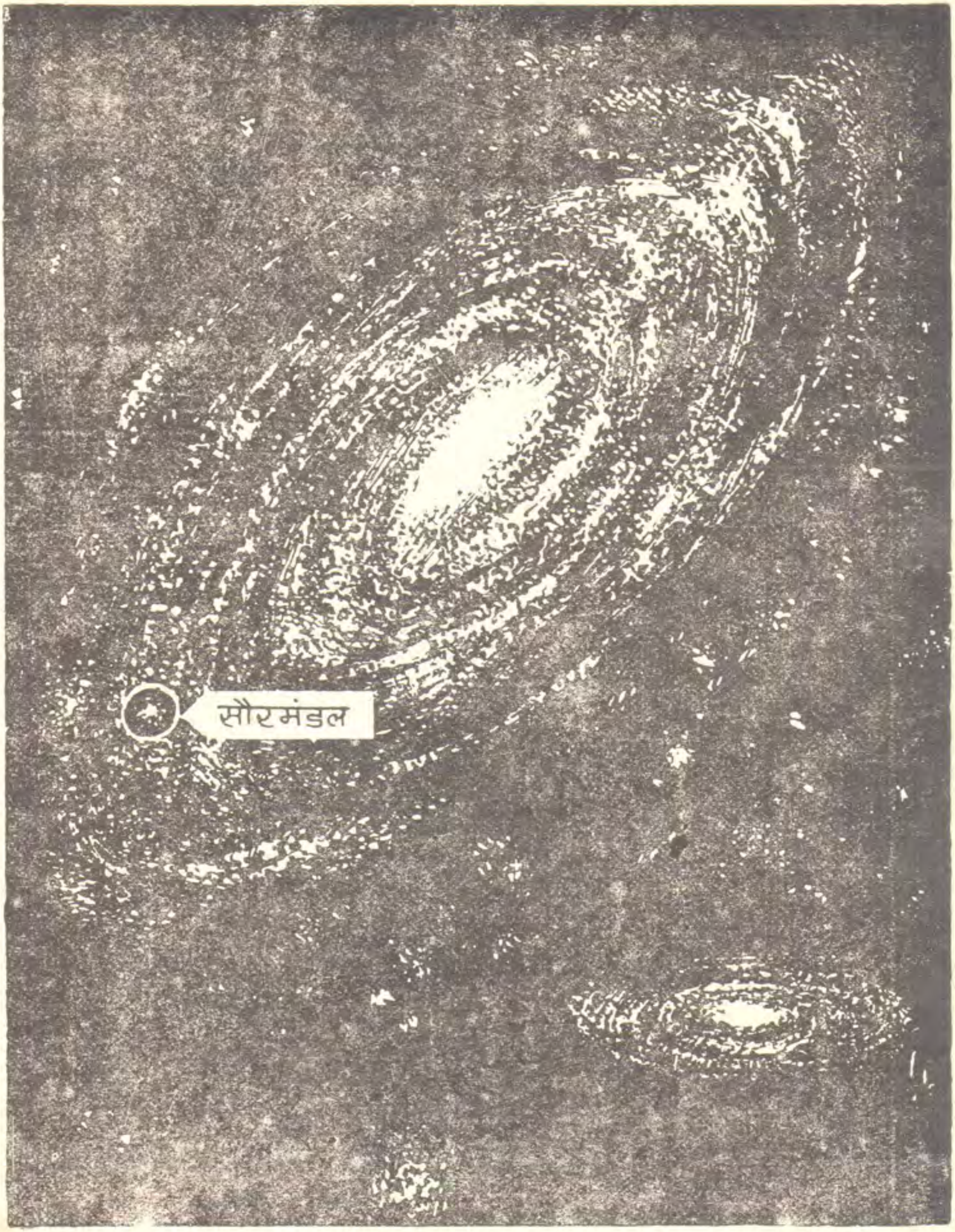

आकाश गंगा में सौर मण्डल

दूरवीक्षण यंत्र द्वारा चन्द्रमा के पर्वतों और घाटियों को देखा था।

मेरे भीतर के जगत् के रहस्यों को जानने का काम शक्तिशाली दूरवीक्षण यंत्रों द्वारा ही पूरा हुआ है। आज कैलीफोर्निया के निकट पैलोमर पर्वत पर २०० इंच व्यास के शीशे वाले, दूरवीक्षणों में सबसे बड़ा दूरवीक्षण यंत्र लगा हुआ है।

बच्चों की एक कविता में कहा गया है :

कौन बता सकता है प्यारे।
आसमान में कितने तारे॥

पर वास्तव में ऐसी बात नहीं है। धरती के किसी भी भाग पर खड़े हुए मनुष्य को दो हजार के लगभग तारे दिखाई देते हैं। तारों से पृथ्वी तक जो प्रकाश पहुंचता है, उसके द्वारा ही खगोल-विज्ञानी तारों के बारे में बहुत-सी बातों का पता लगा लेते हैं। तारे की दूरी, रंग, आकार आदि का पता प्रकाश से ही लग जाता है।

वेधशाला

मेरे ओर-छोर के बारे में वैज्ञानिकों ने कुछ अटकलें लगाई हैं। मैं उन्हें अटकलें ही कहूंगा।

इधर अन्तरिक्ष विज्ञान के नाम से तुम लोगों ने मौसम और ग्रहों, उपग्रहों के बारे में कुछ नई खोज-बीन की है। चन्द्रमा की यात्रा भी की है। तुम यह कर सकते हो, क्योंकि तुम सर्वव्यापक नहीं हो। पर मेरे लिये यह असंभव है। जब ऐसी जगह है ही नहीं जहां मैं न होऊं फिर बताइये कि मैं जाऊं तो कहां जाऊं !

□ □